

श्री जनक अंगना बाजे हो बाजे शहनाई ।

लीला विनोद की लालसा जागी भूमि विहार केल चित पागी
भई जनक कुमारि बाढ़ी शोभा अपार

छाई छाई जै धुनि छाई ॥

लली लाड़ रस रूप निधाना निरखि प्रमोदत जनक सुजाना
लई उर लपटाय सुखु वरिणियो न जाय

पाई पाई अमूल्य निधि पाई ॥

गद गद मातु सुनैना राणी निज अंचल धन लाड़ली जानी
मातु बल बल जाय फूली अंग न समाय

भाई भाई प्राणनि मन भाई ॥

भूषण वसन न्योछावर करती हेम रतन सों याचक भरतीं
सब देत हैं आशीश जियो कोटिन वरीष

जाई जाई जनक लली जाई ॥

मिथिला पुर की आई नारी हाथ लिए सब मंगल थारी
करके सोलह श्रंगार गावें मंगलाचार

लाई लाई खिलोने बहु लाई ॥

गरीबि श्री खण्डि मन मोद अपारा निरखि लली मुख जाय बलहारा

गावें मंगल वाधाई नाचें कूदें हर्षाई
आई आई उछंग लेन आई ॥